

# पाठ - तोप



कवि - वीरेन  
डंगवाल

# पाठ - प्रवेश

प्रतीक और धरोहर दो किस्म की हुआ करती हैं। एक वे जिन्हें देखकर या जिनके बारे में जानकर हमें अपने देश और समाज की प्राचीन उपलब्धियों का भान होता है और दूसरी वे जो हमें बताती हैं कि हमारे पूर्वजों से कब, क्या चूक हुई थी, जिसके परिणामस्वरूप देश की कई पीढ़ियों को दारुण दुख और दमन झेलना पड़ा था।

प्रस्तुत पाठ में ऐसे ही दो प्रतीकों का चित्रण है। पाठ हमें याद दिलाता है कि कभी ईस्ट इंडिया कंपनी भारत में व्यापार करने के इरादे से आई थी। भारत ने उसका स्वागत ही किया था, लेकिन करते-कराते वह हमारी शासक बन बैठी। उसने कुछ बाग बनवाए तो कुछ तोपें भी तैयार कीं। उन तोपों ने इस देश को फिर से आबाद कराने का सपना साकार करने निकले जाँबाजों को मौत के घाट उतारा। पर एक दिन ऐसा भी आया जब हमारे पूर्वजों ने उस सत्ता को उखाड़ फेंका। तोप को निस्तेज कर दिया। फिर भी हमें इन प्रतीकों के बहाने यह याद रखना होगा कि भविष्य में कोई और ऐसी कंपनी यहाँ पाँव न जमाने पाए जिसके इरादे नेक न हों और यहाँ फिर वही तांडव मचे जिसके घाव अभी तक हमारे दिलों में हरे हैं। भले ही अंत में उनकी तोप भी उसी काम क्यों न आए जिस काम में इस पाठ की तोप आ रही है...

# तोप

कंपनी बाग के मुहाने पर  
धर रखी गई है यह १८५७ की तोप  
इसकी होती है बड़ी सम्हाल , विरासत में मिले  
कंपनी बाग की तरह  
साल में चमकाई जाती है दो बार।



1857 की लड़ाई में प्रयोग की गयी तोप कंपनी बाग के द्वार पर रखी हुयी है। यह हम देशवासियों के लिए अनमोल विरासत है। यह 15 अगस्त— स्वतन्त्रता दिवस और 26 जनवरी—गणतंत्र दिवस पर साफ करके चमकाई जाती है।

सुबह शाम कंपनी बाग में आते हैं बहुत से सैलानी  
उन्हें बताती है यह तोप  
कि मैं बड़ी ज़बर  
उड़ा दिए थे मैंने  
अच्छे-अच्छे सुरमाओं के धज्जे  
अपने ज़माने में



आजकल कंपनीबाग के द्वार पर तोप रखी हुयी है। उसे देखकर लोगों को  
याद आता है कि 1857 की लड़ाई में इसके सामने शक्तिशाली लोग भी  
टिक नहीं पाते थे। इससे भयभीत होते थे।



अब तो बहरहाल  
छोटे लड़कों की घुड़सवारी से  
अगर यह फ़ॉरिंग हो  
तो उसके ऊपर बैठकर  
चिड़ियाँ ही अक्सर करती हैं गपशप  
कभी - कभी शैतानी में वे  
इसके भीतर भी घुस जाती हैं  
खास कर गौरायें



आजकल बच्चे उस पर घुड़सवारी करते हैं। चिड़ियाँ  
बैठती हैं जो इस बात का प्रतीक हैं कि एक  
समय के बाद शक्तिशाली भी शक्तिहीन रह जाता  
है।

विरासत में मिली चीजें हमें अपने अतीत के बारे में जानकारी देती हैं। अतः हमें उन्हें सँभालकर रखना चाहिए। संसार की कोई भी वस्तु कितनी ही शक्तिशाली क्यों न हो ; एक न एक दिन उसे नष्ट होना ही पड़ता है।

